

अभिग्रहमतिक

११३, जैन-लक्षणावली

[अभिनिबोध

करने वाली भाषा को अभिग्रहीता भाषा कहते हैं।
अथवा प्रवृत्तिनिमित्तक प्रसिद्ध पदों के कथन को
अभिग्रहीता भाषा कहते हैं।

अभिग्रहमतिक—अभिग्रहा द्रव्यादिषु नानारूपा
नियमाः, तेषु स्व-परविषये मतिः तद्ग्रहण-ग्राहण-
परिणामो यस्यसौ अभिग्रहमतिकः। (सम्बोधस.
वृ. गा. १६, पृ. १७)।

द्रव्यादिकों के विषय में जो अनेक प्रकार के नियम
हैं उन्हें अभिग्रह कहते हैं। उक्त नियमरूप अभि-
ग्रहों में स्व और पर के विषय में ग्रहण करने
कराने रूप जिसकी मति (परिणाम) हुआ करती
है, उसे अभिग्रहमतिक कहते हैं।

अभिघातगति (क्रियाभेद)—जनुगोलक-कन्कु-दा-
रुपिण्डादीनामभिघातगतिः। (त. वा. ५, २४, २१)।
लाख का गोला, गेंद और काष्ठपिण्ड आदि की
अन्य से ताड़ित होने पर जो गति होती है उसे
अभिघातगति कहते हैं।

अभिजातत्व—१. अभिजातत्वं वक्तुः प्रतिपाद्यस्य
वा भूमिकानुसारिता। (समवा. अभय. वृ. सू. ३५,
पृ. ६)। २. अभिजातत्वं यथाविवक्षितार्थाभिधान-
शीलता। (रायप. टी. पृ. १६)।

२ विवक्षित अर्थ के अनुसार कथन की शैली का
नाम अभिजातत्व है। यह पैंतीस सत्यवचनातिशयों
में अठारहवां है।

अभिज्ञा (प्रत्यभिज्ञा)—‘तदेवेदम्’ इति ज्ञानमभि-
ज्ञा। (सिद्धिवि. टी. ४-१, पृ. २२६, पं. ५)।
‘यह वही है’ इस प्रकारका जो ज्ञान (प्रत्यभिज्ञान)
होता है उसे अभिज्ञा कहते हैं।

अभिधान-नामनिबन्धन—जो णामसदो पवुत्तो
संतो अप्पाणं चैव जाणावेदि तमभिहाणणिबन्धणं
णाम। (धवला पु. १५, पृ. २)।

जो नामशब्द प्रवृत्त होकर केवल अपना ही बोध
कराता है, उसे अभिधान-नाम-निबन्धन कहते हैं।
यह नामनिबन्धन के तीन भेदों में से दूसरा है।

अभिधानमल—अभिधानमलं तद्वाचकः शब्दः।
(धव. पु. १, पृ. ३३)।

मल-वाचक शब्द को अभिधानमल कहते हैं।

अभिधायकविधि—तद्- (अभिधेयविधि-) ज्ञापक-
श्चाभिधायकविधिः। (अष्टस. यशो. वृ. ३, ५०)।

ल. १५

विवक्षित अर्थ (अभिधेय) का ज्ञापन कराने वाली
विधि को अभिधायक विधि कहते हैं।

अभिधेयविधि—यस्य बुद्धिः प्रवृत्तिजननीमिच्छां
सूते सोऽभिधेयविधिः। (अष्टस. यशो. वृ. ३, ५०)।
जिसकी बुद्धि प्रवृत्ति की जनक इच्छा को उत्पन्न
करे उसे अभिधेयविधि कहते हैं।

अभिध्या—सदा सत्त्वेष्वभिद्रोहानुध्यानम् अभिध्या।
यथा—अस्मिन् मृते सुखं वसामः। (त. भा. सिद्ध.
वृ. ६-१)।

प्राणियों के विषय में सदा अभिद्रोह के चिन्तन
करने को अभिध्या कहते हैं। जैसे—इसके मर जाने
पर हम सुख से रह सकते हैं।

अभिनय—अभिनयः चतुभिराङ्गिक-वाचिक-सा-
त्त्विकाहार्यभेदैः समुदितैरसमुदितैर्वाऽभिनेतव्यवस्तु-
भावप्रकटनम्। (जम्बूद्वी. वृ. ५-१२१, पृ. ४१४)।
कायिक, वाचनिक, सात्त्विक और आहार्य इन चार
भेदों के द्वारा, चाहे वे समुदाय रूप में हों या
पृथक् पृथक्, अभिनेतव्य (जिस वृत्तान्त को नकल
करके प्रगट किया जाय) वस्तु के भाव को प्रगट
करना, इसका नाम अभिनय है।

अभिनवानुज्ञा—अभिनवानुज्ञा नाम यदा कि-
लान्यो देवेन्द्रः समुत्पद्यते तदा तत्कालवर्तिभिः साधु-
भिर्यदसावभिनवोत्पन्नतयाऽवग्रहमनुज्ञाप्यते सा तेषां
साधूनामभिनवानुज्ञा। (बृहत्क. वृ. ६७०)।

जब कोई नया देवेन्द्र उत्पन्न होता है तब वह
तत्कालवर्ती साधुओं के द्वारा अवग्रह (उपाश्रय)
के लिये अनुज्ञापित किया जाता है, यह उन साधुओं
की अनुज्ञा अभिनवानुज्ञा कही जाती है।

अभिनिबोध—१. अभिनिबोधनमभिनिबोधः।
(स. सि. १-१३)। २. आभिमुख्येन नियतं बोधन-
मभिनिबोधः। (त. वा. १, १३, ५)। ३. अत्या-
भिमुहो नियतो बोधः (अभिनिबोधः), स एव स्वा-
धिकप्रत्ययोपादानादभिनिबोधकम्। (नन्दी. चू. पृ.
१०)। ४. अत्याभिमुहो निग्रहो बोधो जो सो
मग्नो अभिनिबोधो। (विशेषा. भा. ८०, पृ. ३७)।
५. अर्थाऽभिमुखो नियतो बोधोऽभिनिबोधः। (आव.
हरि. वृ. १, पृ. ७)। ६. अहिमुह-णियमिदद्वे सु जो
बोधो सो अहिनिबोधो। (धव. पु. ६, पृ. १५-१६)।
७. यत्तदावरणक्षयोपशमादिन्द्रियानिन्द्रियावलम्बाच्च

अभावप्रमाणता]

११२, जैन-लक्षणावली

[अभिगृहीता भाषा

जिस स्थान पर भव्य और अभव्य जीवों के स्थिति और अनुभाग बन्ध आदि कराने वाले परिणाम समान होकर प्रवृत्त होते हैं, उन्हें अभव्यसिद्धिक-प्रायोग्य परिणाम कहते हैं।

अभावप्रमाणता—प्रत्यक्षादेरनुत्पत्तिः प्रमाणाभाव उच्यते । साऽऽत्मनोऽपरिणामो वा विज्ञानं वाऽन्य-वस्तुनि ॥ प्रमाणपञ्चकं यत्र वस्तुरूपे न जायते । वस्तुसत्तावबोधार्थं तत्राभावप्रमाणता ॥ (प्रमाल. ३८१-८२; प्र. क. मा. पृ. १८६ व १६५ उ.) । प्रत्यक्षादि प्रमाणों की अनुत्पत्ति को, अथवा उक्त प्रत्यक्षादि प्रमाणरूप आत्मा के परिणत न होने को, अथवा अन्य वस्तु-विषयक विज्ञान को अभाव प्रमाण कहते हैं।

अभिगत—१. सम्पत्तम्मि अभिगतो विज्ञा-णओ वा वि अब्भवगओ वा । (बृहत्क. भा. ७३४) । २. सम्यक्त्वे य आभिमुख्येन गतः प्रविष्टः सोऽभिगत उच्यते, यो वा जीवादिपदार्थानां 'विज्ञायकः' विशेषेण ज्ञाता सोऽभिगतः, यद्वा यः अभ्युपगतः—'यावज्जीवं मया गुरुणादमूलं न मोक्त-व्यम्' इति कृताभ्युपगमः सोऽभिगतः । (बृहत्क. वृ. ७३४) ।

जो सम्यक्त्व के अभिमुख हो चुका है, अथवा जीवादि पदार्थों का विशेषरूप से ज्ञाता है, अथवा जो यह प्रतिज्ञा कर चुका है कि मैं जीवन पर्यन्त गुरु के पादमूल को नहीं छोड़ूंगा, उसे अभिगत कहते हैं। यह उत्सारकल्पयोग्य के कुछ गुणों में से एक है।

अभिगतचारित्रार्थ—देखो अधिगतचारित्रार्थ ।

अभिगमन—अभिगमनं सर्वत्राह्यान्मण्डलादभ्यन्तर-प्रवेशनम् । (जीवाजी. मलय. वृ. ३-२, पृ. १७६; सूर्यप्र. वृ. १३-८१) ।

बाहिरी मण्डल से भीतरी मण्डल में प्रवेश करने को अभिगमन कहते हैं।

अभिगमरुचि—१. सो होइ अभिगमरुई सुअणाणं जेण अत्थओ दिट्ठं । एक्कारसमंगाई पइन्नमं दिट्ठि-वाओ य । (उत्तरा. २८-२३, पृ. ३२०) । २. अर्थ-तः सकलसूत्रविषयिणी रुचिरभिगमरुचिः । (धर्मसं. स्वो. वृ. २, २२, पृ. ३८) ।

जिसने अर्थस्वरूप से ग्यारह अंग, प्रकीर्णक और दृष्टिवाद रूप सकल श्रुतज्ञान का अभ्यास किया है

उसे अभिगमरुचि कहते हैं।

अभिगृहीत—१. अभिगृहीदं यद्देशाभिमुख्येन गृ-हीतं स्वीकृतं अश्रद्धानम् अभिगृहीतमुच्यते । (भ. आ. विजयो. टी. ५६) । २. अभिगृहीदं परोपदे-शादाभिमुख्येन स्वीकृतम्, परोपदेशजम् इत्यर्थः । (भ. आ. मूला. टी. ५६) । ३. अभि आभिमुख्येन तत्त्वबुद्ध्या, गृहीतं यथा भौत-भागवत-बौद्धादिभिः । (पंचसं. स्वो. वृ. ४-२) ।

२ दूसरे के उपदेश से ग्रहण किये गये मिथ्यात्व को अभिगृहीत मिथ्यात्व कहते हैं।

अभिगृहीत दृष्टि—अभिमुखं गृहीता दृष्टिः, इद-मेव तत्त्वमिति बुद्धवचनं सांख्य-कणादादिवचनं वा । (त. भा. सिद्ध. वृ. ७-१८, पृ. १००) ।

तत्त्व—यथार्थ वस्तुस्वरूप—यही है, इस प्रकार बुद्ध, सांख्य व कणाद आदि के वचनों पर श्रद्धा करने को अभिगृहीत दृष्टि कहते हैं।

अभिगृहीता (मिथ्यात्व) क्रिया—तत्राभिगृहीता त्रयाणां त्रिषष्ट्यधिकानां प्रवादशतानाम् । (त. भा. सिद्ध. वृ. ६-६) ।

तीन सौ तिरेसठ प्रवादियों के तत्त्व पर श्रद्धा रखने को अभिगृहीता क्रिया कहते हैं।

अभिगृहीता भाषा—१. जा पुण भासा अत्थं अभिगिञ्ज भासिया सा अभिगृहिया । (वशव. चू. २८०, पृ. २३६) । २. अर्थमभिगृह्य योच्यते घटादि-वत् । (वशव. नि. हरि. वृ. २७७, पृ. २१०) । ३. भाषा चाभिगृहे बोद्धव्या—अर्थमभिगृह्य या प्रोच्यते घटादिवदिति । (आव. ह. वृ. मल. हेम. टि. पृ. ८०) । ४. अभिगृहीता प्रतिनियतार्थाविधारणम् । (प्रज्ञाप. मलय. वृ. ११-१६६) । ५. अभिगृहीता प्रतिनियतार्थाविधारणरूपा यथेदमिदानीं कर्तव्यमिदं नेति । यद्वा × × × अभिगृहीता तु अर्थमभिगृह्य योच्यते घटादिवत् । (धर्मसं. मान. स्वो. वृ. ३-४१, पृ. १२३) । ६. अनेकेषु कार्येषु पृष्ठेषु यदेकतरस्या-वधारणमिदमिदानीं कर्तव्यमिति सा अभिगृहीता ऽथवा घट इत्यादिप्रसिद्धप्रवृत्तिनिमित्तकपदाभि-धानं सेति द्रष्टव्यम् । (भाषार. टी. ७८) ।

१ अर्थ को ग्रहण करके जो भाषा बोली जाती है—जैसे 'घट' आदि—वह अभिगृहीता भाषा कही जाती है। ६ अनेक कार्यों के पूछे जाने पर 'इस समय इसे करो' इस प्रकार किसी एक का निश्चय